पारम्परिक चिकित्सकों (गुणियो) के प्रमाणीकरण, दस्तावेजीकरण

राष्ट्रीय गुणी मिशन, उदयपुर, राजस्थान

राष्ट्रीय गुणी मिशन (आर.जी.एम.) पिछले 14 वर्षो से पारम्परिक चिकित्सा पद्धती के क्षेत्र मे उत्तर भारत के 9 राज्यों मे कार्यरत है। इसकी स्थापना 2 मार्च 1998 को उदयपुर राजस्थान में की गई। पिछले 14 वर्षो मे राष्ट्रीय गुणी मिशन ने लगभग 1400 गुणियों को खोज व पहचान की उनकी दक्षता एवं क्षमता को बढाने के लिए गुणी प्रशिक्षणों, रोगोपचार शिविरों, राज्य स्तरीय कार्यशाला, पारम्परिक स्वास्थ्य मेले, गुणी हाट एवं हर्बल गार्डन स्थापित करना आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। साथ ही लोगो को सस्ता और सुलभ उपचार देने के उद्वेश्य से गुणियों के द्वारा रोगोपचार शिविरों, पारम्परिक स्वास्थ्य मेलों का आयोजन किया जिसमे हजारो लोगो का सफल उपचार किया गया । लुप्तप्रायः वनौषधियों के संरक्षण के लिए हर्बल गार्डन, होम हर्बल गार्डन, धर्म बगीचियॉ आदि की स्थापना की गई । साथ ही गुणियों को इंदिरा गांधी मुक्तविश्वविद्यालय, नई दिल्ली से प्रमाणीकरण किया गया और आयुष विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली के कार्यक्रमों के साथ गुणियों को जोडा और राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर पारम्परिक स्वास्थ्य पर होने वाले सेमीनारों मे भी आर.जी.एम ने भाग लिया ।

राष्ट्रीय गुणी मिशन का लक्ष्य

परम्परागत चिकित्सा पद्धति का संरक्षण एवं सम्वर्द्धन कर समुदाय को सस्ती–सुलभ एवं प्रभावकारी चिकित्सा उपलब्ध कराना । साथ ही स्थानिय औषधिय पौधो का संरक्षण संवर्द्धन करना ।

गुणी कौन ?

भारत के गांव–गांव में किसी भी जाति या समुदाय के ऐसे व्यक्ति मिलते है जो स्थानीय जडी–बूटियों से लोगो की नाना प्रकार की बीमारियों का उपचार करते है। इसी बात को मध्य नजर रखते हुए इनका नाम ''**गुणी**'' रखा। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इन्हे **पारम्परिक चिकित्सक** नाम दिया जबकि उत्तर भारत के ग्रामीण समुदाय में इन्हें **वैद्य व भक्त** के नाम से पहचाना जाता हैं।

कैसे है गुणी ?

गुणी अपने कार्य मे किसी भी प्रकार का जातिगत, धार्मिक ऊॅच–नीच का भेदभाव नही बरतते । गुणी रोगियों की चिकित्सा बहुत कम पैसे मे या निःशुल्क करते है, अपनी कुशलता व ज्ञान को वह एक जनसेवा के रूप मे मानते है और उसे भुलाने की कोशिश नही करते है।

गुणी को जडी–बूटियों के नाम, पहचान, मात्रा व गुणधर्म की सम्पूर्ण जानकारी होती है। गुणी पारम्परिक चिकित्सा पद्धती के ज्ञान का किन्ही साधु या गुरू–शिष्य परम्परा से ही ज्ञानोपर्जन करते है। कुछ गुणी ऐसे भी है जो लम्बे समय तक प्रयोग कर चिकित्सा ज्ञान को स्वंयसिद्व कर लेते है।

गुणी पहचान खोज के मापदंड

1. जो गुणी पीढ़ी–दर–पीढ़ी एवं गुरू–शिष्य परम्पराओं से ज्ञानोपार्जन कर उपचार करता हो।
2. गुणियों को जड़ी–बुटियों के गुण धर्मो की पहचान हो साथ ही उन्हें वनौषधियों की उत्पत्ती किन स्थानों पर होती है। कौन से मौसम में उगती हैं। इसी के साथ इन्हें उगाने व इन्हें तोड़ने का पूर्ण ज्ञान हो। किस बीमारी में किस जड़ी–बुटी का कौनसा भाग उपयोग में लिया जाता है इसका ज्ञान गुणी को होता हैं।
3. बीमारी के लक्षणों की पहचान एवं किस मौसम में ये बीमारियॉ होती हैं, किस बीमारी में कौनसी दवा का उपयोग कितनी मात्रा में हो, इसका ज्ञान गुणियो को हो।
4. दवा बनाने की गुणात्मक क्षमता, पैकिंग व्यवस्था एवं दवा को संरक्षित करने का ज्ञान गुणी में हो।
5. गुणी का अनुभव कम से कम 10 वर्ष का हो।
6. गुणी की उम्र कम से कम 28 वर्ष हो।

गुणी ज्ञान का संकलन

1. गुणी जिस बीमारी का उपचार करता है और वह कौन–कौन सी जडी–बूटी उपयोग में लेता है उसका दस्तावेजीकरण करना।
2. गुणी ज्ञान का दस्तावेजीकरण करने से पूर्व सहमति प्रपत्र पर हस्ताक्षर होना चाहिये।
3. यह इसलिये जरूरी है ताकि सामुदायिक लाभांश वितरण/ सामुदायिक बौद्विक सम्पदा अधिकार मिल सके।
4. गुणी जिस जडी–बूटी को उपयोग में लेता है उसका स्थानीय, हिन्दी एवं वानस्पतिक नाम लिखना जरूरी है।
5. अगर जिस औषधि का हिन्दी एवं वानस्पतिक नाम नही मिलता है तो उसका हर्वेरियम तैयार कर उसकी पहचान कराना।

6. गुणी जिस बीमारी का उपचार करता है उसकी पहचान आयुर्वेद चिकित्सकों की मदद से करना।
7. गुणी द्वारा निर्मित औषधि की निर्माण विधि, मात्रा, देने का तरीका, परहेज, अनुपान एवं अवधि आदि की जानकारी लेना।
8. गुणियों द्वारा उपयोग में ली जाने वाली वनौषधियो का शास्त्रोक्त मूल्यांकन करना।

गुणी खोज के दौरान ग्राम सभा एवं ग्राम पंचायत की भूमिका

राष्ट्रीय गुणी मिशन द्वारा गुणी खोज व पहचान का कार्य गांव स्तर पर सबसे पहले सरपंच, अध्यापक, वार्डपंच, आंगनवाडी सदस्य स्थानिय स्वंय सेवी संस्थाओ आदि के माध्यम से गुणी के बारे मे पता लगाता है । जिसके तहत यह लोग हमे गुणी के बारे मे जानकारी देते है और विस्तार पूर्वक उसके बारे मे बताते है। जिस गांव मे गुणी होता है उस गांव मे ग्राम सभा का आयोजन किया जाता है जिसमे गुणी व ग्रामवासी भाग लेते है। ग्रामसभा मे सभी ग्रामवासी गुणी के बारे मे जानकारी देते है कि उक्त गुणी इतने वर्षो से इन–इन बिमारियो का उपचार सफलतापूर्वक कर रहा है । गुणी गांव की ग्राम सभा मे किस बिमारी मे कौन–कौन सी स्थानिय जडी–बूटियों का उपयोग करता है उसकी जानकारी ग्राम सभा मे लोगो को बतात है साथ ही यह ज्ञान उसने किससे सीखा है उसकी जानकारी भी व ग्राम सभा मे बतात है। इस पूरी प्रक्रिया के बाद उक्त गुणी का पंचायत मे रजिस्ट्रेशन करवाया जाय जिसके लिए गुणी ग्राम सभा से एक प्रस्ताव पारित करवाता है। ग्रामवासी एवं गुणी उक्त प्रस्ताव को पंचायत की ग्रामसभा मे सरपंच के समाने रखते है जिसमे सरपंच सर्व सम्मती से उक्त प्रस्ताव को पारित करता है। और गुणी को पंचायत की तरफ से प्रामण–पत्र दिया जाता है । इस प्रमाण पत्र के आधार पर राष्ट्रीय गुणी मिशन प्रमाणित गुणी द्वारा कौन सी बिमारी के उपचार में किन–किन जड़ी–बूटीयों का उपयोग करता है क्या इन जड़ी–बूटियों का संदर्भ आयुर्वेद के किसी ग्रंथ मे उपलब्ध है इसकी जानकारी अनुभवी आयुर्वेदाचार्य लगाते है। अगर किसी गुणी का नुस्खा विशेष होता है और उसका विवरण आयुर्वेद के ग्रंथो मे नही मिलता है और उस नुस्खे से मरीजों को लाभ हो रहा है तो उसे यूनिक मानते हुऐ उसका दस्तावेकरण किया जाता है।

गुणी के नुस्खो का परिक्षण

गुणी के नुस्खो का परिक्षण औषधालय एवं रोगोपचार शिविरो मे वरिष्ठ आयुर्वेदाचार्य के तत्वाधान मे किया जाता है। अगर किसी गुणी के नुस्खो से ज्यादा से ज्यादा मरीजों को लाभ प्राप्त होता है उस नुस्खें का प्रमाण–पत्र दे दिया जाता है ।

गुणी प्रशिक्षण कार्यक्रम गुणियो के नुस्खों के परिक्षण के बाद गुणियो की दक्षता एवं क्षमता को बढाने के लिए 5–5 दिवसीय तीन चरणो के प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है। जो इस प्राकर है

प्रथम चरण प्रशिक्षण

इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत गुणियों के ज्ञान को आदान प्रदान प्रक्रिया द्वारा बढाया जाता है, इसके अतिरिक्त निम्न बिन्दुओं पर चर्चा की जायेगी –

- पारम्परिक चिकित्सा पद्वती के इतिहास के बारे मे जानकारी ।
- गुणियों ने पारम्परिक चिकित्सा पद्वती का ज्ञान कब, कहॉ, किससे प्राप्त किया ।
- गुणियों की भूमिका
- मानव जीवन मे स्वास्थ्य की महत्वता ।
- दिनचर्या, रात्रीचर्या एवं ऋतुचर्या और संन्तुलित आहर–विहार के बारे मे जानकारी ।
- पर्यावरण एवं स्वास्थ्य मे आपसी संबध ।
- प्राथमिक एवं घरेलू उपचार की जानकारी ।
- शरीर रचना एवं शरीर क्रिया विज्ञान के बारे मे जानकारी ।
- वात, कफ, पित्त की जानकारी ।
- आने वाले समय मे समाज मे गुणियों की भूमिका किस तरह की होनी चाहिए ।
- ग्रामीण क्षैत्र मे महिलाओं और बच्चों मे होने वाली सामान्य बिमारियॉ के कारण, पहचान एवं निवारण के बारे मे जानकारी ।
- मौसमी बिमारियॉ की पहचान, कारण एवं निवारण की जानकारी ।

द्वितीय चरण प्रषिक्षण

द्वितीय चरण प्रशिक्षण भी पॉच दिवसीय होता है इस चरण मे वही गुणी भाग लेते है जिन्होने प्रथम चरण मे भाग लिया द्वितीय चरण प्रशिक्षण मे जंगल भ्रमण कार्यक्रम होता है जिसके अर्न्तगत वनौषधियों की खोज/पहचान एवं उपयोगीता के बारे मे जानकारी दी जाती है। जंगल भ्रमण के दौरान कौन सी वनौषधि किस बीमारी मे किस विधि से उपयोग की जाती है उस पर गुणियों की साथ चर्चा की जाती है। प्रशिक्षण के दौरान सभी गुणी अपने–अपने ज्ञान का आदान प्रदान भी करते है।

तृतीय चरण प्रशिक्षण

तीसरा चरण भी पॉच दिवसीय होता इसमे भी वही गुणी भाग लेते है जिन्होने प्रथम चरण और द्वितीय चरण मे भाग लिया इस प्रशिक्षण मे सभी गुणी आपनी–अपनी दवाओं का निर्माण कर उस दवा मे कौन–कौन सी जडी–बूटियॉ कितनी मात्रा मे डालकर किस विधि से बनाना एवं किस बीमारी मे कितनी मात्रा मे व कितने समय तक देना आदि का ज्ञान गुणि आपस मे बताते है और साथ ही निर्माण करके भी

बताया जाता है। प्रशिक्षण के अंत मे गुणियों को औषधि किट प्रदान किया जाता है जिसके अन्दर उपचार की औषधि एवं सामग्री होगी ।

इन प्रशिक्षणों मे गुणी बीमारी के उपचार की विधि की सीख लेता है एवं इन प्रशिक्षणों मे गुणियों के ज्ञान का संकलन भी किया जाता है क्योकि आज जरूरत भी है इन गुणियों के ज्ञान के संकलन की इनके ज्ञान को संकलन करने के बाद ही हम हमारे देश की धरोहर जो हमे प्रकृतिक रूप से विरासत के रूप मे मिली है उसका संरक्षण संवर्द्वन कर सकेगे।

भंवर धाभाई
8003709709